Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 12, (2017) 119-121

कामकाजी एवं गृहिणी महिलाओं का सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक अध्ययन

नीलम आर्या[1*] एवं हरेष राम[2]
[1]कुमाऊ विश्वविद्यालय नैनीताल।
[2]संकुल सन्दर्भ व्यक्ति–बिल्लेख, ताड़ीखेत

*Corresponding Author Email:haresh.ram159@gmail.com

Received: 06.07.2017; Revised: 17.08.2017; Accepted: 14.12.2017
©Society for Himalayan Action Research and Development

सारांश: वर्तमान समय में जिस तीव्र गति से समाज में परिवर्तन हो रहा है उसमें महिलाओं की नवीन भूमिका ने निष्चित रूप से समाज वैज्ञानिकों का ध्यान आकृष्ट किया है। आज की महिलाएं सिर्फ घर की चाहर दीवारी में घिरी रहना व भोग्या बनकर जीना पसन्द नहीं करती, वरन वे पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने का अग्रसर हैं। महिलाएं चाहे कामकाजी हों या गृहिणी घरेलू क्रियाकलापों में तो सार्थक भूमिका का निर्वहन करती ही हैं अपितु कामकाजी होने की स्थिति में वे अपनी परम्परागत भूमिका के साथ–साथ नई भूमिका के निर्वहन में भी सक्रिय योगदान देती हैं, परन्तु इस नई भूमिका ने तरह–तरह की सामाजिक–मनोवैज्ञानिक समस्यायें भी पैदा की हैं। जिस ओर दुनियॅा के ज्यादातर देषों के सामाजिक चिन्तकों व वैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों व सुझावों के द्वारा सामाजिक विज्ञान के ज्ञान क्षेत्र को समृद्ध किया है।

कुंजी शब्द: कामकाजी महिलाआ गृहिणी की सामाजिक स्थिति, पारिवारिक स्थिति, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक स्थिति

प्रस्तावना

वर्तमान में विष्व की अर्थव्यवस्था में महिलाओं की अहम् भूमिका है एक सामान्य परिवार की अगर बात करें तो पुरूष यदि आर्थिक क्रियाकलापों को अन्जाम देता है तो महिला उसके उस क्रियाकलाप में महत्वपूर्ण अदृष्य या सदृष्य भूमिका में नजर आती है। एषिया के अधिकतर देष विकास की प्रारम्भिक अवस्था में हैं, कृषि के क्षेत्र में महिलाओं के नियोजन का अनुपात काफी अधिक है। दक्षिण–पूर्व एषिया के अधिकांष देषों में महिलाओं का घर से बाहर जाकर काम करने का चलन कम है, वहां भी महिलाएं फसल की देख–रेख, कटाई की प्रक्रिया, अन्न निकालने आदि उद्यम में योगदान देकर परिवार की आय को बढ़ाती हैं। भारत में भी स्त्रियों की स्थिति पर गठित राष्ट्रीय समिति (1974) ने महिलाओं के पारम्परिक कार्य लगभग अन्य एषिया के देषों जैसी ही कृषि सम्बन्धित पाया[1]।

आज कामकाजी महिलाएं कृषि सम्बन्धी अपने घर और खेत में कार्यों से हटकर अपनी षिक्षा के परिप्रेक्ष्य में घर से बाहर जाकर आर्थिक उपार्जन करती हैं तथा अपने परिवार की देख–रेख करती हैं। इन कामकाजी महिलाओं की दिनचर्या एवं इनकी मनोसामाजिक स्थिति उन महिलाओं से भिन्न होती है जो सिर्फ घर गृहस्थी एवं कृषि कार्यों को संभालती हैं। एक अध्ययन में जुनेजा (1979) ने कामकाजी महिलाओं का उनके बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया तथा गैर कामकाजी महिलाओं से उनकी तुलना की। प्राप्त परिणाम से स्पष्ट हुआ कि कामकाजी माताएं गैर कामकाजी माताओं की तुलना में अपने बच्चों पर कम ध्यान देती हैं तथा स्वस्थता और षिक्षण में अधिक सख्त रहती हैं। इनके अध्ययन में कामकाजी माताओं के बच्चे अधिक स्वतंत्र, अधिक समायोजित, अधिक सामाजिक तथा अच्छे व्यवहार वाले पाये गय[2]।

पी0 गुप्ता (1979)[3] ने अपना एक अध्ययन तीन सौ ऐसी षिक्षित कामकाजी महिलाओं पर किया जो अध्यापन, लिपिकीय, चिकित्सकीय तथा नर्सिंग के कार्य से सम्बन्धित थी। इस अध्ययन में 52 प्रतिषत से अधिक कामकाजी महिलाओं ने कहा कि उनके पति का दृश्टिकोण उनके व्यवसाय के प्रति अच्छा है। लगभग 62 प्रतिषत से अधिक महिलाओं ने बताया कि उनके माता–पिता को उनका कार्य करना अच्छा लगता है और वे उनको कार्य करने के लिये प्रोत्साहित करते रहते हैं। लगभग 29 प्रतिषत महिलाओं ने बताया कि वे काम न भी करें तो भी उनके पास पर्याप्त धन है और वे काम छोड़ देंगी जबकि 36 प्रतिषत महिलाओं ने बताया कि वे अपना कार्य नहीं छोडेंगी [4]।

वीर सिंह (1997) ने अपने एक अध्ययन में कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं की चिन्ताओं को मापने हेतु दोनों ही समूहों से 20–20 महिलाऐं 25 वर्ष की तथा 10–10 महिलाऐं 40 वर्ष की ली गयी। शोधकर्ता ने पाया कि दोनों ही आयु वर्ग की कामकाजी महिलाओं में चिन्ता का विषेश प्रभाव था [5]। जितेन्द्र के0सी0 गुलाटी (1998) ने कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के परिवार में पिता और बच्चों के बीच गुणात्मक और भावनात्मक सम्बन्धों का अध्ययन किया। इस हेतु शहरी क्षेत्र की मध्यम वर्गीय 50 कामकाजी तथा 50 गैर कामकाजी माताओं को लिया गया। ये सभी माताऐं ऐसी थी जिनका कि कम से कम 3 से 6 वर्ष की आयु का एक बच्चा था। अध्ययन से प्राप्त परिणामों से ज्ञात हुआ कि गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चे की तुलना में कामकाजी महिलाओं के बच्चों ने अपने पिता के साथ अधिक समय व्ययतीत किया है [6]।

गौरी ठक्कर एवं गिरीष्वर मिश्रा (1999)[7] ने 250 विवाहित महिलाओं, जिनमें 196 कामकाजी तथा 54 गैर कामकाजी थी, के प्रतिदिन के दौड़–भाग और कुषलता के अनुभव में सामाजिक सहायता की भूमिका का अध्ययन किया और पाया कि यद्यपि कामकाजी महिलाओं ने काफी अफरा तफरी का अनुभव किया और समाज से उन्हें गैर कामकाजी महिलाओं की अपेक्षा कम सहायता मिली, परन्तु वे आनन्द का अनुभव करने में अधिक कुषल रही। रोजगार से प्राप्त आय तथा स्तर ने उन्हें विभिन्न भूमिकाओं से उत्पन्न होने वाले दबावों का सामना करने में मदद दी और उनको कुषलता में भी मदद मिली। एक अन्य अध्ययन में भी भारतीय दम्पत्तियों की कुषलता में महिलाओं के कार्य के स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में प्रायोज्यों की कुषलता के विभिन्न पहलुओं जैसे प्रभाव, आषाओं की प्राप्ति, सादृष्ता, पारिवारिक समूह और सामाजिक सहायता, मुकाबला करने में हिम्मत, कमजोर स्वास्थ्य आदि का अध्ययन किया गया। प्रतिदर्ष के रूप में ष्शहरी मध्यम वर्गीय 46 ऐसे दम्पत्तियों का चुनाव किया गया जिनमें पति–पत्नी दोनों कामकाजी थे।

अध्ययन के परिणाम से ज्ञात हुआ कि कामकाजी महिलाओं ने गैर कामकाजी महिलाओं की तुलना में मुकाबला करने में अधिक साहस दिखाया तथा परिवार में अकेले कामकाजी पति की तुलना में पति–पत्नी दोनों के कामकाजी होने की स्थिति में पति को अधिक सामाजिक सहायता मिली ।

अरूभूति दुबे और विनिता कुमारी (1999)[8] ने मनोवैज्ञानिक दबाव और उनका कामकाजी तथा गैर कामकाजी महिलाओं के जीवन में गुणवत्ता के प्रभाव के सम्बन्ध में एक अध्ययन किया जिसमें उन्होंने महिलाओं के चार समूह बनाए किन्तु दो का जिक्र किया है। उच्च दबाव वाली कामकाजी महिलाएं, उच्च दबाव वाली गैर कामकाजी महिलाऐं। अध्ययन के परिणाम से ज्ञात हुआ कि कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं में उच्च मनोवैज्ञानिक दबाव उनके जीवन की कमजोर विषिष्टता से सम्बद्ध थे तथा उच्च दबाव वाली कामकाजी महिलाओं के समूह ने जीवन की नकारात्मक घटनाओं का अनुभव किया और विषिष्ट जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण कमजोर रहा। निम्न दबाव वाली गैर कामकाजी महिलाओं का जीवन के प्रति दृष्टिकोण अच्छा था । रवि संधु (1999) के अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि कामकाजी महिलाओं की तुलना में गैर कामकाजी महिलाओं की पुत्रियां चलने फिरने वाली, प्रसन्न रहने वाली तथा आचार विचार करने वाली थी जबकि गैर कामकाजी महिलाओं की तुलना में कामकाजी महिलाओं की पुत्रियां भावुक तथा तनाव में रहने वाली थी [9]।

डी0 लक्ष्मी रानी और पी0के0 मिश्रा (2000) ने आवष्यक सेवाओं में कामकाजी महिलाओं के साधक व्यवहार का अध्ययन किया। प्रयोज्यों का चयन न्यूरोसाइंस तथा सामान्य मेडिसन श्रेणी में किया गया जिसमें 144 महिलाऐं डॉक्टर तथा नर्स थी। अध्ययन से प्राप्त परिणामों से ज्ञात हुआ कि प्रत्येक व्यवसाय समूहों में आयु के साथ–साथ समस्या आधारित व्यवहार बढ़ता गया[10]।

कामकाजी तथा गृहिणी महिलाओं के सामाजिक एवं मनौवैज्ञानिक अध्ययन में पाया कि कामकाजी महिलाओं के तुलना में गृहिणी महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति निम्न पायी गयी। कामकाजी महिलाओं का प्रभाव उनके बच्चों के लालन–पालन पर भी पड़ता है इसी कारण बच्चों के व्यवहार में एक विकृति सी दृष्टि गोचर होती है। कामकाजी महिलाओं में चिन्ता का स्तर अधिक होता है लेकिन इनके परिवार वाले उन्हें कार्य करने को प्रोत्साहित करते रहते हैं। गृहिणी महिलाओं में कामकाजी महिलाओं की तुलना में सन्तुष्टि का भाव अधिक होता है।

सन्दर्भ सूची

1– आर्या नीलम(2008) ''षोध प्रबन्ध'' कुमाऊ विष्वविद्यालय नैनीताल पृष्ठ 40–41

2– जुनेजा, आर(1978)ए कॉम्परेटिव स्टडी ऑफ वर्किंग एण्ड नॉन–वर्किंग वूमेन विथ रिर्गाड टू प्रक्टिस एण्ड प्राब्लम्स इन चाइल्ड रियरिंग, इण्डियन साईक्लॉजिकल रिव्यू 5, 1–4, 20–24

3– पी0 गुप्ता (1979)

4– आर्या नीलम (2008) ''ष्शोध प्रबन्ध'' कुमाऊ विष्वविद्यालय नैनीताल पृश्ठ 42

5– सिंह वीर 1997 एन्जाइटी एमंग वकिंग एण्ड नॉन–वर्किंग वूमेन, प्राची जनरल ऑफ साइको कल्चर डाइमेन्सन (अक्टू) 13 (2) 105–180

6– गुलाटी, जितेन्द्र के0सी0 (1998) फादर चाइल्ट इन्ट्रक्षन इन वर्किंग एण्ड नॉन–वर्किंग मदर्स फैमिलीज इण्डियन जनरल ऑफ साइकोमैट्री एण्ड एजुकेषन 29 (2) 139–142

7– ठक्कर, गौरी एण्ड मिश्रा, गिरीष्वर 1999 डेली हैजलेस, वेल विंग एण्ड सोषल सपोर्टः एक्सपीरियंस ऑफ इम्प्लाइड वूमेन इन इडिया, साइकोलॉजीकल स्टडीज, 44 (3) 69–78

8– दुबे, अरूभूति एण्ड कुमारी विनीता (1999) साइको सोषल स्ट्रेस एण्ड प्रीसिब्ड क्वालिटी ऑफ लाईफ इन वर्किंग एण्ड नॉन–वर्किंग वूमेन, इण्डियन जनरल ऑफ साइकोलॉजीकल इष्यूज 7 (2) 63–66

9– संधु, रवि (1999) डिफरेंषियल पर्सनेलिटी पैंटर्न ऑफ द डाटर्स ऑफ वर्किंग मदर, जनरल कम्यूनिटी गाइडेन्स एण्ड रिसर्च 16 (1) 1–8

10– लक्ष्मीरानी, डी एण्ड मिश्रा, पी0के0 (2000) कापिंग विहेवियर एमंग वर्किंग वूमेन इन इमरजेंसी सर्विसः सोषल साइंस इण्टरनेषनल 16 (1–2) 33–51

****